(10) पूर्ण विशिष्टीकरण सम्भव नहीं - प्रो. ग्राहम इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहते हैं कि रिकार्डो मान्यता, कि दो देश दो भिन्न वस्तुओं के उत्पादन में पूर्णरूप से विशिष्टीकरण प्राप्त कर लेते हैं, सही नहीं है। यह सिद्धान्त अवास्तविक हो जाता है। जैसे विश्व व्यापार में इस प्रकार उदाहरण मिलते हैं जब छोटा और बड़े देश के व्यापार में एक बड़ा राष्ट्र, जैसा कोई छोटा देश किसी वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त करता है तो उसकी वह अपना पूर्ण अतिरिक्त उत्पादन बड़े देश को निर्यात कर सकता है किन्तु बड़ा देश पूर्ण विशिष्टीकरण नहीं कर सकता है क्योंकि छोटा देश एक विशेष वस्तु के उत्पादन में पूर्णरूप से विशिष्टीकरण करता है तो उसका अतिरिक्त उत्पादन इतना अधिक हो जाता है कि बड़ा देश उसको आयात नहीं कर सकता और (11) यह बड़ा अपनी पूर्ण आवश्यकता की पूर्ति छोटे देश के आयात से नहीं कर सकता।

(11) पूर्ण रोजगार की मान्यता गलत - इस सिद्धान्त की एक प्रमुख कमजोरी यह है कि यह पूर्ण रोजगार की मान्यता पर आधारित है अर्थात् व्यापार करने वाले दोनों देशों में पूर्ण रोजगार की स्थिति रहती है। किन्तु कीन्स ने प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों की पूर्ण रोजगार की मान्यता को अवास्तविक सिद्ध कर खण्डित कर दिया है। कीन्स का कहना है कि सदैव पूर्ण रोजगार से कम की स्थिति विद्यमान रहती है। इस दृष्टि से तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त भी अव्यावहारिक प्रतीत होता है।

(12) गतिशीलता का अभाव - यह सिद्धान्त आवश्यक रूप से कुछ स्थैतिक मान्यताओं पर आधारित है। यह व्यापार करने वाले देशों के उत्पत्ति के साधनों को स्थिर मानकर चलता है तथा दोनों के उत्पादन फलन को भी समान मानता है किन्तु वास्तविक जगत में इन सबमें परिवर्तन होता है अतः यह सिद्धान्त गतिशील अर्थव्यवस्था में लागू नहीं होता है

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

(13) वस्तुओं के मांग की व्याख्या नहीं करता — कुछ आलोचकों ने इसी आधार पर, इस सिद्धान्त की आलोचना की है कि तुलनात्मक लागत सिद्धान्त इस बात की स्पष्ट व्याख्या नहीं करता है कि एक देश किसी वस्तु की कितनी मात्रा का उत्पादन कर दूसरे का निर्यात करता है तथा उस वस्तु की कितनी मात्रा का विदेशों से आयात करता है, जैसे भारत जैसे देश कुछ वस्तुओं का निर्यात करता है एवं कुछ वस्तुओं का आयात करता है।

(14) स्थिर लागत की मान्यता — तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त केवल उन्हीं दशाओं में लागू हो सकता है जब विदेशी व्यापार स्थिर लागत पर हो रहा हो तथा इसके मार्ग में कोई बाधा न हो, किन्तु वास्तव में वास्तविकता यह है कि वर्तमान के अधिकांश, देशों उत्पादन क्रमागत उत्पत्ति ह्रास तथा प्राकृतिक, लोच प्रभावी विनिमय आदि कई बाधाएं स्थिर लागत में रूकावट पैदा करती है।

(15) यह सिद्धान्त सभी विकसित देशों में लागू नहीं होता — इस सिद्धान्त की कमजोरी यह रही है कि यह पिछड़े और अर्द्धविकसित देशों में लागू नहीं होता। यदि एक विकसित और पिछड़े देशों में व्यापार हो तो पिछड़े देशों को लाभ नहीं होगा बल्कि क्षति होगी।

यद्यपि तुलनात्मक लागत सिद्धान्त की काफी आलोचना की गयी है किन्तु इसका आशय यह नहीं है कि यह सिद्धान्त महत्वहीन है। विदेशी व्यापार की प्रकृति को स्पष्ट करने में इस सिद्धान्त ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। यही कारण है कि सैमुअलसन ने तो यहाँ तक इस सिद्धान्त की प्रशंसा की है। उनके ही शब्दों में "यदि लड़कियों की भांति, सिद्धान्त भी सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के विजयी हो सके तो तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त प्रथम स्थान प्राप्त करेगा क्योंकि इसका सुन्दर और तर्कपूर्ण ढांचा है।"

Scanned with CamScanner